No. of Printed Pages : 3

f-R

MOR-03

2012

सामान्य हिन्दी

GENERAL HINDI

निर्धारित समय : तीन घण्टे] *[पूर्णांक : 100*

निर्देश : *(i) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।*

(ii) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके अंत में इंगित हैं ।

(iii) एक प्रश्न के सभी भागों का उत्तर अनिवार्यत: एक साथ दिया जाए ।

(iv) पत्र लेखन संबंधी प्रश्न के उत्तर में अपना नाम, पता अथवा अनुक्रमांक न लिखें । यदि अनिवार्य हो तो क्ष, त्र, ज्ञ (XYZ) लिख सकते हैं ।

1. स्वतंत्रता का अधिकार मनुष्य के लिए उन बाहरी परिस्थितियों को द्योतित करता है जिनमें उसे अपने विवेक के अनुसार कर्म करने में बाहरी प्रतिबन्धों से मुक्ति हो । इसके अतिरिक्त यह भी स्मरणीय है कि आन्तरिक विवेक का भी शिक्षा, संगति आदि के संदर्भ में विकास होता है । अपने को पहचानने के लिए या अपने को खोजने के लिए मनुष्य को एक मानवीय परम्परा का उत्तराधिकारी होना पड़ता है । मानवीय स्वतंत्रता की सिद्धि के लिए इस प्रकार पहले तो बाहरी प्रतिबन्ध या अंकुश का अभाव होना चाहिए, दूसरे शिक्षा-दीक्षा होनी चाहिए, तीसरे विवेक का आन्तरिक उदय होना चाहिए । इनमें पहली माँग की पूर्ति का स्पष्ट ही यह अर्थ नहीं है कि समाज में मनुष्य जो चाहे कर सके । उसका अर्थ यही हो सकता है कि जिन नियमों और प्रतिबन्धों का मनुष्य को बलात पालन करना है वे स्वयं विवेक पर आधारित हों । ऐसे ही शिक्षा-दीक्षा भी स्वतंत्रता के लिए तभी उपयोगी होगी जब वह स्वयं विवेक पर आधारित होगी । अत: स्वतंत्रता का विकास व्यक्ति और समाज में विवेक की प्रतिष्ठा के द्वारा ही संभव है । व्यक्तित्व के विकास के लिए स्वतंत्रता आवश्यक होती है । स्वतंत्रता निरंकुशता या इच्छा-दासता नहीं है । उसका वास्तविक अर्थ स्वाधीनता है ।

(क) रेखांकित पंक्तियों की व्याख्या कीजिए । **10 + 5 = 15**

(ख) उक्त गद्यांश पर आधारित मानवीय स्वतंत्रता की आवश्यकता तथा उससे जुड़ी शर्तों पर पाँच वाक्य लिखिए ।

2. मीडिया और यातायात की तकनीकों में असाधारण विकास और उनका हमारे निजी और सार्वजनिक जीवन में बरबस प्रवेश, शायद हमारे समय का सबसे चटक लक्षण है । उनके प्रतिदिन बढ़ते हुए प्रभावों के बीच हम अपनी दुनिया को छोटी करके नहीं रह सकते । हम पूरे विश्व संदर्भ में जीने के लिए मजबूर हैं । हमें इस वास्तविकता का विरोध करके नहीं, इसके साथ सही समझौते करके ही रहना होगा – और मेरे लिए इन समझौतों के प्रारूपों के संकेत विभिन्न साहित्यों के बदलते हुए आपसी रिश्तों और रवैयों में हमेशा मौजूद रहे हैं । एक तो यह परिवर्तनों के पीछे-पीछे, प्रत्यय बुद्धि से, न चलकर उन्हें आगे बढ़कर थोड़ा पहले से सोचें तो उन्हें ज्यादा संतुलित और

रचनात्मक ढंग से स्वीकार कर सकेंगे । दूसरे मीडिया और यातायात के साधनों ने अगर एक अर्थ में हमारी बाहरी दुनिया को बहुत छोटा कर दिया है, तो दूसरी ओर हमारी निजी दुनिया को बहुत बड़ा भी । हमारे बीच अपरिचय घटा है । एक छोटा परिवार बहुत बड़ा परिवार हो गया है – इतना बड़ा कि अक्सर ऐसा लगता है कि उसमें भौतिक एकता तो है लेकिन वह घनिष्ठता नहीं है जो 'वसुधैव कुटुम्बकं' के आदर्श को चरितार्थ करती हो । एक दूसरे के निकट आने के साधनों का अगर हम सही उपयोग नहीं कर पा रहे हैं या दुरूपयोग कर रहे हैं, तो उसके लिए साधन नहीं हम दोषी हैं ।

(क) इस अवतरण का उचित शीर्षक लिखिए । **5 + 10 = 15**

(ख) गद्यांश में व्यक्त विचारों का एक तिहाई शब्दों में संक्षेपण कीजिए ।

3. (क) अधिसूचना किसे कहते हैं ? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए । **10 + 10 = 20**

(ख) छात्रों में वन सम्पदा की महत्ता के प्रति जागरूकता लाने के लिए उच्च शिक्षा निदेशक द्वारा प्राचार्यों को सम्बोधित एक परिपत्र का प्रारूप तैयार कीजिए ।

4. (अ) निम्नलिखित शब्दों में से किन्हीं **पाँच** शब्दों में लगे हुए उपसर्ग अलग कीजिए : **5**

(i) अथाह

(ii) अवतार

(iii) संस्कार

(iv) निरूपम

(v) प्रमेय

(vi) आक्रमण

(vii) उन्नयन

(आ) निम्नलिखित किन्हीं **पाँच** शब्दों के विलोम लिखिए : **5**

(i) अर्पण

(ii) उदात्त

(iii) गरल

(iv) जारज

(v) खंडन

(vi) श्लाघ्य

(vii) निष्काम